पश्चिम बंगाल राज्य में प्रचलित तबला-वादन की परम्परा का विवेचनात्मक अध्ययन

संगीत विषय में पी-एच. डी. उपाधि की आंशिक पूर्ति हेतु

प्रस्तावित रूपरेखा

शोध छात्र

उदय शंकर दास

शोध निर्देशक

डॉ० शिवेन्द्र प्रताप त्रिपाठी

असिस्टेंट प्रोफेसर

संगीत विभाग, कला संकाय

दयालबाग एजुकेशनल इंस्टीट्यूट (डीम्ड टू बी यूनिवर्सिटी)

दयालबाग, आगरा - 282005

2025

भूमिका-

संगीत, मानव जीवन का अभिन्न अंग है और उसकी भावनाओं का सबसे सुंदर अभिव्यक्ति माध्यम भी है। जब कोई व्यक्ति अपनी किसी प्रतिभा को सौंदर्य और कलात्मक ढंग से प्रकट करता है, तो वह प्रतिभा कला का रूप धारण कर लेती है। कला, चाहे वह किसी भी प्रकार की हो, मानवता के गहनतम अनुभवों और संवेदनाओं का साकार रूप होती है। इसी संदर्भ में, संगीत कला की सबसे सजीव और सौंदर्यपूर्ण विधा मानी जाती है। प्राचीन शास्त्रों में संगीत की परिभाषा दी गई है – "गीतं वाद्यं तथा नृत्यं त्रयं संगीतमुच्यते," अर्थात् गीत, वाद्य और नृत्य, तीनों का समन्वय ही संगीत है।

संगीत शब्द की उत्पत्ति संस्कृत भाषा से हुई है, जिसका अर्थ है 'सम्यक रूप से सुसज्जित गान'। अर्थात वह गायन, जिसमें वादन और नृत्य के साथ भावों की पूरी अभिव्यक्ति हो, संगीत कहलाता है। संगीत केवल मनोरंजन का साधन नहीं है, बल्कि यह ध्यान केंद्रित करने का माध्यम भी है और धार्मिक व आध्यात्मिक साधना का हिस्सा भी। इसीलिए, प्राचीन काल से ही, संगीत को देवी-देवताओं की उपासना के साथ जोड़ा गया है। भारतीय सभ्यता में संगीत को सदैव एक उच्च स्थान प्राप्त रहा है, चाहे वह पूजा-पाठ हो, युद्ध की तैयारी हो, या फिर जीवन के सामान्य कार्य हों, हर स्थिति में संगीत ने मनुष्य का साथ दिया है।संगीत में तीन प्रमुख घटक होते हैं – गायन, वादन और नृत्य। वाद्य यंत्रों का इसमें अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। गायन और नृत्य, दोनों ही वाद्य यंत्रों पर आधारित होते हैं, और इनका ताल वादन से गहरा संबंध होता है। ताल संगीत को एक निश्चित लय और समय के बंधन में बांधता है, जिससे संगीत सुनने में प्रभावी और सुन्दर बनता है। ताल वाद्य जैसे तबला, मृदंग, पखावज आदि के बिना संगीत की कोई भी विधा अधूरी मानी जाती है। इन वाद्यों का प्रयोग संगीत को सुगठित और आकर्षक बनाने के लिए अनिवार्य होता है। तबलाभारतीय शास्त्रीय संगीत में सबसे अधिक प्रचलित और लोकप्रिय ताल वाद्य है। इसका इतिहास काफी प्राचीन है। 17वीं शताब्दी से पहले ही तबले को एक प्रतिष्ठित और शास्त्रीय वाद्य के रूप में मान्यता मिल चुकी थी। तबले का उद्भव और

विकास भारतीय शास्त्रीय संगीत के साथ जुड़ा हुआ है, और इसके वादन की तकनीकों में समय के साथ कई सुधार और बदलाव हुए। पेशेवर तबला वादकों ने तबले के विभिन्न बाजों और शैलीगत प्रस्तुतियों को विकसित किया, जिससे तबला वादन की कला एक उच्च स्तर पर पहुंची। तबला भारतीय संगीत में एक अनिवार्य अंग बन चुका है। इसके विभिन्न घराने और शैलियाँ पूरे भारत में फैली हुई हैं, जिनमें दिल्ली, अजराड़ा, लखनऊ, फर्रुक्खाबाद, बनारस, और पंजाब के घराने प्रमुख हैं। पश्चिम बंगाल में 19वीं शताब्दी में तबले का विशेष प्रयोग देखने को मिला। यहाँ के त्योहारों, लोक संगीत और धार्मिक आयोजनों में तबले का महत्वपूर्ण स्थान रहा है। तबला वादन की कला का विस्तार और उन्नति पश्चिम बंगाल में विशेष रूप से कोलकाता में हुई। 19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में लखनऊ के नवाब वाजिद अली शाह के कोलकाता में निर्वासन के बाद, बंगाल में तबला वादन और अन्य शास्त्रीय संगीत की विधाओं का प्रसार और अधिक बढ़ गया।

कोलकाता सदैव से ही भारतीय सांस्कृतिक धरोहर का केंद्र रहा है। पं० ज्ञान प्रकाश घोष ने तबला वादन की कई शैलियों और घरानों को पनपने का अवसर प्रदान किया। यहाँ तबले के प्रति लोगों की विशेष रुचि रही है, और कई प्रतिष्ठित तबला वादक अपनी कला का प्रदर्शन करने के लिए कोलकाता आते रहे हैं। इससे बंगाल के लोग तबले की विभिन्न शैलियों और तकनीकों से परिचित हुए। इसी क्रम में, तबले की कई प्रमुख शैलियाँ और घराने के कलाकार कोलकाता में फले-फूले। फर्रुखाबाद बाज का तबला, जो अपनी कोमलता और सौम्यता के लिए प्रसिद्ध है, कोलकाता में बहुत लोकप्रिय हुआ। इसके अलावा बनारस, दिल्ली और लखनऊ घरानों का भी यहाँ विशेष प्रचलन रहा है।

तबला वादन के इन घरानों और शैलियों की परंपरा को पश्चिम बंगाल में संगीत के विद्यार्थियों ने खूब अपनाया। कोलकाता में संगीत शिक्षा का एक सुनहरा दौर आरंभ हुआ, जिसमें घरानों के उस्ताद अपनी विद्या को प्रसारित करने लगे। तबले की विभिन्न शैलियों को सीखने और सिखाने की यह परंपरा आज भी कोलकाता और पूरे पश्चिम बंगाल में जारी है। इस क्षेत्र में तबला वादन की कला को सीखने और प्रस्तुत करने वाले कई उस्तादों ने अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त की है। इन उस्तादों ने अपनी अनूठी तकनीक और बाजों से तबले को एक नए आयाम तक पहुँचाया है।

संगीत और विशेष रूप से तबला वादन की इस समृद्ध परंपरा का पश्चिम बंगाल की संस्कृति पर गहरा प्रभाव पड़ा है। यहाँ संगीत केवल एक कला ही नहीं, बल्कि जीवन का एक अभिन्न हिस्सा बन चुका है। चाहे वह शास्त्रीय संगीत हो या लोक संगीत, तबले का प्रयोग हर प्रकार की संगीत विधा में होता है। यह न केवल संगीत को सुंदर और सजीव बनाता है, बल्कि इसके माध्यम से भावनाओं की अभिव्यक्ति भी होती है।

विषय का प्रादुर्भाव-

पश्चिम बंगाल में संगीत की परंपरा का इतिहास अत्यंत समृद्ध और विविधतापूर्ण है। प्रारंभ से ही इस प्रांत में गायन, वादन, और नृत्य की प्रथाएं समाज के हर वर्ग में प्रचलित रही हैं। शास्त्रीय संगीत और लोक संगीत दोनों ही पश्चिम बंगाल की सांस्कृतिक धारा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते रहे हैं। चाहे इसे किसी विशेष घराने या परंपरा के नाम से नहीं जोड़ा गया हो, लेकिन यहां के संगीत प्रेमियों ने इन विधाओं को खुले मन से अपनाया और उनका विकास किया। विशेषकर कोलकाता, जिसे सांस्कृतिक राजधानी भी कहा जाता है, शास्त्रीय संगीत और लोक संगीत के प्रमुख केंद्र के रूप में उभरा। यहां पर विभिन्न संगीत समारोहों और कार्यक्रमों का आयोजन बड़े पैमाने पर किया जाता रहा है। 18वीं और 19वीं शताब्दी के दौरान कोलकाता में संगीत की गतिविधियों में तेजी आई, जब यहां देश और विदेश के बड़े कलाकार आने लगे और अपनी प्रस्तुतियां देने लगे। शास्त्रीय संगीत के कार्यक्रमों में गायन, वादन, और नृत्य के साथ-साथ तबला वादन को भी प्रमुखता से स्थान मिला। तबले की बंदिशें श्रोताओं के बीच लोकप्रिय होने लगीं और यह संगीत का अविभाज्य हिस्सा बन गया।

तबलाजो कि शास्त्रीय संगीत का प्रमुख वाद्य यंत्र है, पश्चिम बंगाल के संगीत प्रेमियों के बीच अपनी पहचान बनाने लगा। देश-विदेश के कई ख्यातिप्राप्त तबला वादक यहां अपनी प्रस्तुतियां देते रहे हैं, जिनमें उस्ताद अल्ला रक्खा, पंडित आनिन्द चटर्जी, पंडित कुमार बोस, पंडित शंकर घोष, पंडित श्यामल बसु, पंडित ज्ञान प्रकाश घोष, पंडित किशन महाराज, उ० मसीत खां, उ० हबीबुद्दीन खां, उ० फ़िरोज़ खां, पं० अनोखेलाल मिश्र, पं० महापुरुष मिश्रऔर उस्ताद ज़ाकिर हुसैन जैसे नाम शामिल हैं। इन महान तबला वादकों ने न केवल अपनी कला का प्रदर्शन किया बल्कि

अपने शिष्यों को भी तबला वादन की विभिन्न शैलियों में प्रशिक्षित किया। इस प्रकार, पश्चिम बंगाल के लोग इन उस्तादों और कलाकारों से संगीत और तबला वादन की बारीकियां सीखते रहे।

पश्चिम बंगाल में तबला वादन की लगभग सभी प्रमुख शैलियों का प्रचार-प्रसार बड़े स्तर पर हुआ। लगभग सभी घरानों की शैलियों का पश्चिम बंगाल में आगमन हुआ और इनका प्रभाव यहाँ के संगीत पर स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। विशेषकर 19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में, जब नवाब वाजिद अली शाह को अंग्रेजों द्वारा कोलकाता निर्वासित किया गया, तब उनके साथ लखनऊ के कई संगीतज्ञ और तबला वादक भी कोलकाता आए। इससे कोलकाता का संगीत परिदृश्य और समृद्ध हुआ और तबला वादन की परंपरा यहां और भी गहरी हो गई। धीरे-धीरे कोलकाता में प्रचारित सगीत परम्परा कोलकाता की सीमाओं को लांघते हुये बंगाल के अन्य क्षेत्रों में फैलती चली गयी तथा पूरे बंगाल में संगीत की मधुर बयार बहाने लगी इन क्षेत्रों में वीरभूम, बर्धमान, बंकूडा, मुर्शिदाबाद इत्यादि प्रमुख हैं।

सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण-

"पश्चिम बंगाल राज्य में प्रचलित तबला वादन की परंपरा का विवेचनात्मक अध्ययन" इस विषय पर शोध छात्र ने गहन साहित्यिक सर्वेक्षण किया। पश्चिम बंगाल में प्रचलित तबला वादन की परंपरा से संबंधित साहित्य का सर्वक्षण के उपरांत प्राप्त साहित्य निम्नलिखित है:

पुस्तकें -

- संगीत सिद्धांत – संगीत नायक गोपेश्वर बंद्योपाध्याय : इस पुस्तक में शास्त्रीय संगीत के सिद्धांतों पर चर्चा की गई है, जो ताल और लय की समझ को समृद्ध करती है। हालांकि, तबले पर विस्तृत चर्चा सीमित है।
- बंगालीर राग संगीत चर्चा – दिलीप कुमार मुखोपाध्याय : इस पुस्तक में बंगाली समाज में राग संगीत की परंपरा और उसकी विविधता का विश्लेषण किया गया है। यह पुस्तक तबला वादन की भूमिका को राग संगीत के संदर्भ में समझने में मदद करती है।
- ताल तत्तेर क्रम विकास - डॉ मृगांक शेखर चक्रवर्ती, के एल एम प्राइवेट लिमिटेड : यह पुस्तक ताल के विकास पर

केंद्रित है और इसमें विभिन्न तालों की संरचना और विकास के पहलुओं पर विचार किया गया है। पश्चिम बंगाल के शास्त्रीय संगीत में ताल की परंपरा और उसमें तबले की भूमिका को समझने में यह पुस्तक उपयोगी साबित होती है।

- ताल ओविधान - श्री मानस दासगुप्ता/श्रीमती ममता दासगुप्ता, पूर्वांचल हाउसिंग ए स्टेट, 2आर6, कोलकाता : इस पुस्तक में ताल और लाल के शब्दकोश पर विस्तृत जानकारी दी गई है। बंगाल के संगीत में ताल और तबले की महत्ता को समझने के लिए यह एक महत्वपूर्ण स्रोत है।
- भारतीय ताल प्रसंग -- श्री प्रबीर भट्टाचार्य, अन्नेसन प्रकाशनी, नाथ ब्रदर्स, कोलकाता : यह पुस्तक भारतीय तालों की विभिन्न परंपराओं पर केंद्रित है, जिसमें बंगाल में तबले के योगदान पर कुछ संदर्भ मिलते हैं। ताल और तबले की परंपरा को गहरे रूप में समझने के लिए यह उपयोगी है।
- तबला इतिहास - श्री शंभू नाथ घोष - नाथ ब्रदर्स, 7 श्याम चरण डे स्ट्रीट, कोलकाता : तबले के इतिहास और उसके तकनीकी पक्षों पर जानकारी प्रदान करने वाली यह पुस्तक बंगाल के तबला वादन के प्रारंभिक विकास पर भी प्रकाश डालती है।
- संगीत तत्व - श्री देवव्रत दत्ता, 49/1, अचार्य प्रफुल्ला चंद्र रोड, कोलकाता : यह पुस्तक संगीत के सिद्धांतों पर आधारित है और इसमें तबला वादन के ताल और लय के सिद्धांतों को गहराई से समझाया गया है।
- पश्चिम बंगा लोक संस्कृति विचित्र - श्री सनत कुमार मित्र, विश्वस पब्लिशिंग हाउस, 5/1 कॉलेज रोड, कोलकाता : इस पुस्तक में पश्चिम बंगाल की समृद्ध लोक संस्कृति का विवेचन है, जिसमें तबला वादन की भूमिका को भी आंशिक रूप से समझा जा सकता है।
- विंग्स सतोकेर बंगाली जीबन एवं संस्कृति - स्वप्न बसु एवं हर्ष दत्त, पुस्तक बीपनी, 27 बेनिया टोला रोड, कोलकाता : इस पुस्तक में बंगाली जीवन और संस्कृति के विभिन्न पहलुओं का विस्तृत अध्ययन है, जिसमें संगीत और तबला वादन की सांस्कृतिक धारा को भी देखा जा सकता है।
- बांग्ला छन्देर से काल ए काल - वीरेंद्र दत्ता/श्री शंकर नील दास, एस पी पब्लिशिंग, दक्षिण 24 परगना : इस

पुस्तक में बंगाली संगीत और तबला वादन के ऐतिहासिक विकास का आंशिक उल्लेख मिलता है।

- पश्चिम बंगाल मेला एवं उत्सव - सुबोध चक्रवर्ती : इस पुस्तक में पश्चिम बंगाल के विभिन्न मेलों और उत्सवों में तबले के उपयोग का वर्णन है, जो तबला वादन की लोक परंपराओं को समझने के लिए महत्वपूर्ण हो सकता है।
- बांग्लादेशी उच्चागो संगीत चर्चा एवं गुणिजन - डॉ आगोमोनी घोष, बंगाल पब्लिशिंग, ढाका : इस पुस्तक में बंगाल के शास्त्रीय संगीत और उसमें तबले की भूमिका पर चर्चा की गई है। हालाँकि यह बांग्लादेश पर केंद्रित है, लेकिन पश्चिम बंगाल में तबला वादन की समानताएं देखी जा सकती हैं।
- निधू बाबू ओ तार टप्पा - श्री रमाकांत चक्रवर्ती, फर्स्ट पुणे स्टोर एडिशन, कोलकता : यह टप्पा संगीत में तबले की भूमिका और इसके विकास पर जानकारी प्रदान करती यह पुस्तक बंगाल के संगीत परिदृश्य को समझने में सहायक है।
- बांग्ला संगीतेर विवरतण - श्री करुणामय गोस्वामी, प्रतिभास, 18ए, कोलकाता : बांग्ला संगीत और गीतों में ताल वाद्यों, विशेषकर तबले, की भूमिका का विवेचन इस पुस्तक में मिलता है।
- तबलार कथा - श्री सुबोध नदी/श्रीमती दुर्गा नदी, 16/1ए, महारानी हेमंत कुमारी स्ट्रीट, कोलकाता : इस पुस्तक में तबला वादन के ऐतिहासिक और तकनीकी पहलुओं का वर्णन है, विशेषकर बंगाल में तबले की परंपरा पर प्रकाश डाला गया है।
- तबलार बाज - श्री अनिल भट्टाचार्य/श्रीमती रमोला भट्टाचार्य, डिन लेन, कोलकाता : बंगाल में तबला वादन की शैलियों और घरानों पर केंद्रित यह पुस्तक तबले की विभिन्न तकनीकों और परंपराओं का विश्लेषण करती है।
- ताल समीक्षा - श्री अनिल भट्टाचार्य/श्रीमती रामूला भट्टाचार्य, डिन लेन, कोलकाता : यह पुस्तक ताल और तबले की तकनीकी संरचनाओं पर विस्तृत जानकारी देती है और बंगाल के संगीत में तबले की भूमिका को समझने में सहायक है।
- कोलकाता पूरा कथा - देवाशीष बसु (सम्पादित)/पुस्तक, बीपनी,29 बनिया टोला, कोलकत्ता : कोलकाता के

सांस्कृतिक इतिहास पर आधारित इस पुस्तक में तबला वादन और संगीत के विकास पर चर्चा है।

- पश्चिम बंलार संस्कृति – विनय घोष प्रकाश भवन, कोलकत्ता : यह पुस्तक पश्चिम बंगाल की सांस्कृतिक धारा पर केंद्रित है और इसमें संगीत और तबला वादन का वर्णन आंशिक रूप से किया गया है।

शोध प्रबंध -

वर्ष	शीर्षक	शोधकर्ता	निर्देशक	विश्वविद्यालय
28/12/2017	तबले में पुरब बाज के फर्रुखाबाद घराने के कलाकार एवं वादन शैली का विश्लेषणात्मक अध्ययन	द्विवेदी, पूजा	रश्मि दीक्षित	इलाहाबाद विश्वविद्यालय
11/02/2022	तबला का अजराडा घराने की विशेषतायें एवं कलाकारों के योगदान का अध्ययन	प्रियंका मिश्र	रेणु जौहरी	इलाहाबाद विश्वविद्यालय
3/04/2023	तबला वादक पंडित अमलेश चटर्जी का पखावज फर्रुखाबाद घराने में योगदान	राजेश कुमार आर्य	गोविन्द सिंह बोरा	कुमाऊ विश्वविद्यालय
8/06/2023	तबला एवं पखावज की महिला वादिकाओ की संगीत क्षेत्र में स्थिति एक विश्लेषणात्मक अध्ययन	ज्योति	वंदना चौबे	बनस्थली विद्ध्यापीठ
9/06/2023	तबला गुरु पंडित ठाकुर किशन सिंह का व्यक्तित्व एवं कृतित्व	त्रिपुरारी सक्सेना	प्रभा भारद्वाज	राजस्थान विश्वविद्यालय
5/07/2024	तबला एवं पखावज के विकास में अवध क्षेत्र का योगदान एक विश्लेषणात्मक अध्ययन	हरजित कौर	अतुल कुमार	जीवाजी विश्वविद्यालय

पत्र/पत्रिकायें-

शीर्षक	पता	लेखक	वर्ष
रविन्द्र संगीत एवं उसका ताल पक्ष	हाथरस उत्तर प्रदेश	डॉ० शिवेंद्र प्रताप त्रिपाठी	मार्च 2012
तबला प्रदर्शन में बहुमुखी प्रतिभा के संघर्ष का एक अध्ययन	मानित विश्वविद्यालय शोधकोश जरनल ऑफ़ रेसुअल एंड परफोर्मिंग आर्ट	साईं राम	जून 2022
इम्पोर्टेंस ऑफ़ तबला इन म्यूजिकल ट्रेडिशन ऑफ़ इंडिया	इंटरनेशनल जौर्नेल ऑफ़ साइंटिफिक रिसर्च	कीर्ति रारामजान जेना	

साहित्य सर्वेक्षण से यह स्पष्ट होता है कि पश्चिम बंगाल में तबला वादन पर केंद्रित साहित्य सीमित है। विशेष रूप से जो साहित्य प्राप्त होते हैं वे हिंदी भाषा में बहुत अल्प मात्रा में प्राप्त होते हैं।पश्चिम बांग्ला भाषा की पुस्तकों और शोध पत्रों में कुछ जानकारी उपलब्ध है लेकिन वह भी यत्र-तत्र बिखरी हुई है।पश्चिम बंगाल में प्रचलित परम्परागत एवं

घरानेदार तबले की बंदिशें दृश्य-श्रव्य माध्यमों में अत्यंत ही किंचित रूप से उपलब्ध है, परन्तु सुव्यवस्थित रूप से लिपिबद्ध नहीं है। अतः इस विषय पर विस्तृत शोध की आवश्यकता है ताकि तबला वादन की परंपरा को व्यापक रूप से समझा और प्रस्तुत किया जा सके।

विषय कथन- अस्तु उपरोक्त बिन्दुओं को दृष्टिगत रखते हुए शोधार्थी ने निम्नलिखित विषय का चयन किया है –"पश्चिम बंगाल राज्य में प्रचलित तबला वादन की परंपरा का विवेचनात्मक अध्ययन"।

विषय में प्रयुक्त शब्दों की व्याख्या-

- पश्चिम बंगाल: विद्वानों के अनुसार, पश्चिम बंगाल भारत का एक प्रमुख राज्य है, जो अपनी समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर,संगीत,नृत्यऔर कला के लिए प्रसिद्ध है।
- प्रचलित: इसका अर्थ है "जो आम तौर पर प्रचलन में हो" या "जो व्यापक रूप से प्रचलित या उपयोग में हो।" यहाँ प्रचलित शब्द का प्रयोग तबला वादन की उन परंपराओं के लिए किया गया है,जो पश्चिम बंगाल में समय के साथ विकसित हुई और व्यापक रूप से अपनाई गई।
- तबला वादन: मानक विशाल हिंदी शब्दकोश के अनुसार, वादन का अर्थ है - "बजाना" या "संगीत वाद्ययंत्र को बजाना"।यहाँ वादन का प्रयोग विशेष रूप से तबला बजाने की कला और तकनीक से संबंध है।
- परंपरा: लोक भारती प्रमाणीकरण हिंदी कोश के अनुसार, परंपरा का अर्थ है - "वह विचार,प्रथा या क्रम जो बहुत समय से एक ही रूप में चलता आ रहा हो"।यहाँ परंपरा का अर्थ है,तबला वादन की वह पद्धति जो पश्चिम बंगाल में भिन्न-भिन्न घरानों के रुप में उत्पन्न हुई।
- विवेचनात्मक अध्ययन: इसका अर्थ है - किसी विषय के सभी पक्षों का विश्लेषण करना और तथ्य व वास्तविकता के आधार पर विचार करना।

अध्ययन के उद्देश्य-

- पश्चिम बंगाल का ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक अध्ययन करना।
- पश्चिम बंगाल में प्रचलित तबला वादन की विभिन्न परंपराओं का अध्ययन करना।
- पश्चिम बंगाल में प्रचलित तबले की विभिन्न परम्परागत एवं घरानेदार रचनाओं का अध्ययन करना।

- पश्चिम बंगाल के सुप्रसिद्ध तबला कलाकारों के सांगीतिक योगदान का अध्ययन करना।
- समकालीन तबला वादन और तकनीकी नवाचार का अध्ययन करना।

परिसीमांकन-

इस शोध कार्य का मुख्य केंद्र "पश्चिम बंगाल राज्य में प्रचलित तबला-वादन की परंपरा का विवेचनात्मक अध्ययन" तक सीमित रहेगा। अध्ययन की भौगोलिक सीमा पश्चिम बंगाल राज्य तक ही सीमित है, जिसमें कोलकाता और इसके आस-पास के प्रमुख संगीत केंद्रों का विश्लेषण प्रमुखता से किया जाएगा। यह शोध तबला वादन की ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, और संगीतात्मक धारा का पश्चिम बंगाल के परिप्रेक्ष्य में विश्लेषण करेगा।

इस परिसीमांकन के अंतर्गत निम्नलिखित बिंदु शामिल हैं:

- अध्ययन को केवल पश्चिम बंगाल राज्य तक ही सीमित किया जायेगा।
- अध्ययन को पश्चिम बंगाल राज्य में प्रचलित तबले के घरानों तक ही सीमित किया जायेगा।
- पश्चिम बंगाल के प्रमुख तबला वादकों के जीवन और उनके योगदान का अध्ययन इस शोध का हिस्सा होगा। अध्ययन में मुख्य रूप से प्रसिद्ध और स्थापित 20 कलाकारों का ही सीमित किया जाएगा।

अध्ययन विधि-

प्रस्तुत शोध कार्य को प्रभावी ढंग से पूर्ण करने के लिए विभिन्न अनुसंधान पद्धतियों का प्रयोग किया जाएगा। अध्ययन के लिए निम्नलिखित विधियों का प्रयोग किया जाएगा:

- विश्लेषणात्मक विधि
- साक्षात्कार विधि
- विवेचनात्मक विधि
- सर्वेक्षण विधि

अध्ययन के स्रोत-

प्रस्तुत शोध कार्य को व्यापक और प्रामाणिक जानकारी के आधार पर तैयार किया जाएगा,जिसके लिए विभिन्न प्रकार के स्रोतों का प्रयोग किया जाएगा। जिसके अंतर्गत पुस्तकालय, संग्रहालय, दृश्य-श्रव्य सामग्री, इंटरनेट पर उपलब्ध सामग्री एवं कलाकारों से प्राप्त साक्षात्कारों से तथ्यपरक सूचनाएं एकत्र की जाएगी।

अध्यायन के सोपान-

भूमिका (संबंधित सामग्री का सर्वेक्षण)

प्रथम अध्याय - पश्चिम बंगाल: एक परिचय

- ऐतिहासिक पृष्ठभूमि
- भौगोलिक पृष्ठभूमि
- सांस्कृतिक पृष्ठभूमि

द्वितीय अध्याय - पश्चिम बंगाल में संगीत परंपरा

- शास्त्रीय संगीत
- उपशास्त्रीय संगीत
- सुगम संगीत
- रविन्द्र संगीत
- लोक संगीत

तृतीय अध्याय - पश्चिम बंगाल की तबला-वादन परंपरा

चतुर्थ अध्याय - पश्चिम बंगाल के सुप्रसिद्ध तबला वादकों का सांगीतिक योगदान

पंचम अध्याय - पश्चिम बंगाल में प्रचलित तबले की पारम्परिक रचनायें

उपसंहार

शोध का महत्व-

यह शोध कार्य पश्चिम बंगाल में प्रचलित तबला वादन की परंपरा को समझने और उसके महत्व को उजागर करने के उद्देश्य से किया गया है। पश्चिम बंगाल की सांस्कृतिक धरोहर और संगीत परंपरा में तबला वादन की एक विशिष्ट और महत्वपूर्ण भूमिका है। इस शोध का मुख्य उद्देश्य पश्चिम बंगाल के तबला वादन की परंपरा,उसकी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, संगीत में उसके योगदान, परंपरागत व घरानेदार बंदिशों और सुप्रसिद्ध कलाकारों के बारे में गहन अध्ययन कर संगीत प्रेमियों, शोधकर्ताओं और कलाकारों को विस्तृत जानकारी प्रदान करना है।

संदर्भ ग्रंथ सूची-

- ताल ओविधान - श्री मानस दासगुप्ता/श्रीमती ममता दासगुप्ता, पूर्वांचल हाउसिंग ए स्टेट 2 आर6, कोलकाता
- तबला विशारद - डॉ० शिवेन्द्र प्रताप त्रिपाठी – कनिष्क पब्लिशर्स, दिल्ली, वर्ष 2012
- भारतीय संगीते ताल ओ छन्द – पं० सुबोध नंदी, 16/1a कोलकत्ता, 2014
- तालतत्तेर क्रम विकास - डॉक्टर मृगांक शेखर चक्रवर्ती, के अल ऍम प्राइवेट लिमिटेड, कोलकत्ता, 1986
- बांग्ला संगीतेर विवरतण - श्री करुणामय गोस्वामी, प्रतिभास, 18ए, कोलकाता, 2014
- तबलार कथा - श्री सुबोध नदी/श्रीमती दुर्गा नदी, 16/1ए, महारानी हेमंत कुमारी स्ट्रीट, कोलकाता
- तबलार बाज - श्री अनिल भट्टाचार्य/श्रीमती रमोला भट्टाचार्य, डिन लेन, कोलकाता
- स्वप्न वृत्त – बाबूजी श्री नकीपुर रहमान साहू, छोटो नीलपुर रोड, बर्धमान, 2006
- ताल समीक्षा - श्री अनिल भट्टाचार्य/श्रीमती रामूला भट्टाचार्य, डिन लेन, कोलकाता

संबंधित प्रश्नावली-

इस पूरे शोध-प्रस्ताव में कई महत्वपूर्ण प्रश्न उठाए गए हैं, जो पश्चिम बंगाल में प्रचलित तबला वादन की परंपरा से संबंधित हैं। कुछ बहुत ही मौलिक और महत्वपूर्ण प्रश्न निम्नलिखित हैं:

1. पश्चिम बंगाल में तबला वादन की परंपरा का उद्भव और विकास कैसे हुआ?
2. पश्चिम बंगाल में प्रचलित तबला वादन की शैलियों (घरानों) का स्वरूप क्या है?
3. पश्चिम बंगाल के सुप्रसिद्ध तबला वादकों का योगदान क्या रहा है?
4. पश्चिम बंगाल में तबला वादन की परंपरागत रचनाओं की विशेषताएँ क्या हैं?
5. पश्चिम बंगाल की लोक और शास्त्रीय संगीत परंपरा में तबला का महत्व क्या है?
6. तबला वादन की तकनीक और उसकी प्रचलित विधियों का क्या स्वरूप है?

7. पश्चिम बंगाल के तबला वादन में अन्य राज्यों के तबला घरानों की क्या भूमिका रही है?

8. क्या पश्चिम बंगाल में तबला वादन की एक स्वतंत्र और विशिष्ट शैली विकसित हुई है?

9. तबला वादन में पश्चिम बंगाल के लोक संगीत का योगदान और प्रभाव क्या रहा है?

10. क्या पश्चिम बंगाल में तबला वादन के विकास के लिए संरचनात्मक और संस्थागत प्रयास किए गए हैं?